

---

# Shri Rama Ashtakam

श्रीरामाष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Shri Rama Ashtakam

File name : rAmAShTakam7.itx

Category : raama, aShTaka

Location : doc\_raama

Author : gAyatrisvarUpa brahmachari

Proofread by : Vani V

Description/comments : Author/publisher comment mentions the cost of the book as bhagavadbhakti

Latest update : January 7, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 30, 2022

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Shri Rama Ashtakam

---

### श्रीरामाष्टकम्

---



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीरामं करुणानिधिं य परमं पूज्यं मडदूपकं  
मायातीतमजं य नित्यविमलं हृदं जगद्व्यापकम् ।  
वाशिष्ठयादिक्रुषीश्वरैः प्रतिदिनं ब्रह्मैव जानन्ति यं  
सत्यं श्यामलसुन्दरञ्च सुभदं श्रीरामयन्द्रं भजे ॥ १ ॥

रामं श्यामलकोमलाङ्गसुतनुं सीतापतिं सुन्दरं  
रामं भक्तप्रियञ्च धार्मिकरङ्गशस्य सदृभूषणम् ।  
रामं नीतिप्रियं य ब्राह्मणप्रियं सत्यप्रियं धार्मिकं  
सत्यं श्यामल सुन्दरञ्च सुभदं श्रीरामयन्द्रं भजे ॥ २ ॥

रामं कण्टकरावाणान्तकरणं सीतासुरक्षाकरं  
रामं भक्तविभीषणाय सुभदं लङ्कापुरी दायकम् ।  
रामं लक्ष्मणपूर्वजञ्च भरतशत्रुघ्नपूज्यं परं  
सत्यं श्यामल सुन्दरञ्च सुभदं श्रीरामयन्द्रं भजे ॥ ३ ॥

कौशल्या दशयुधि राजतनयं रामाधनारायणं  
नानावस्त्रविभूषणसिद्धितं हस्ते धनुर्वाणकम् ।  
कर्णे कुण्डललेभरत्नजटितं रूपं सदा रम्यकं  
सत्यं श्यामल सुन्दरञ्च सुभदं श्रीरामयन्द्रं भजे ॥ ४ ॥

सर्वस्मिन्जगतीतले य भुवने त्वं प्राणिनां प्राणदः  
सर्वात्मासि य ज्ञानियोगिमुनिनां त्वं ज्ञानदो मोक्षदः ।  
भक्तानां य सुरक्षकं प्रतिदिनं यैतन्यरूपं परं  
सत्यं श्यामल सुन्दरञ्च सुभदं श्रीरामयन्द्रं भजे ॥ ५ ॥

त्वं सूर्योऽसि यमेन्द्रधर्ममरुतां रूपोऽसि ब्रह्मात्मको  
रुद्रव्यासशुकात्मकश्च वरुणश्चन्द्रोऽसि कृष्णात्मकः ।

त्रय्यात्मानमभ्युत्पन्नमनघं साङ्ख्यादिवेद्यं प्रभुं  
सत्यं श्यामलसुन्दरञ्च सुभदं श्रीरामयन्द्रं भजे ॥ ६ ॥

डैवल्यात्मकशान्त ! डे रघुपते सीतापते डे प्रभो  
अह्मानन्दस्वरूप डे गुणनिघे लक्ष्मीपते डे विभो ।  
डे विश्वम्भरसत्स्वरूप भगवन् डे शुद्धभोधात्मक  
सत्यं श्यामलसुन्दरञ्च सुभदं श्रीरामयन्द्रं भजे ॥ ७ ॥

डे त्रैलोक्यपते चराचरगुरो डे विश्वसञ्चालक  
डे आदर्शचरित्र डे नरखरे अह्माङ्गसंरक्षक ।  
सौमित्रि अनुमत्प्रियं प्रतिदिनं सुग्रीवमित्रं प्रभुं  
सत्यं श्यामलसुन्दरञ्च सुभदं श्रीरामयन्द्रं भजे ॥ ८ ॥

समर्पयामि डे रामरामाष्टकस्तवं प्रभो ।  
नमामि भगवन् रामप्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ९ ॥  
इति गायत्रीस्वरूप अह्मयारीविरचितं श्रीरामाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Vani V

---

—  
*Shri Rama Ashtakam*

pdf was typeset on January 30, 2022

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

